1st Choice

अशोक के अभिलेखो का विवरण

1st Choice

अशोक के शिलालेख (14)

1. गिरनार शिलालेख (सौराष्ट्र)
2. कालसी शिलालेख (U.P देहरादून)
3. शाहबाजगढी शिलालेख (पाकिस्तान)
4. मानसेहरा शिलालेख (प॰ पाक)
5. धौली शिलालेख (उडीशा)
6. सोपरा शिलालेख (महाराष्ट्र)
7. एर्रगुडि शिलालेख (आन्ध्र प्रदेश)
8. जौगड़ शिलालेख (आन्ध्र प्रदेश)

अशोक के लघु शिलालेख (15)

1. रूपनाथ शिला (मध्य प्रदेश
2. सहसराम शिला (दक्षिण बिहार)
3. बैराठ शिला (राजस्थान जयपुर) (भाबु)
4. गुर्जरा शिला (मध्य प्रदेश)
5. मास्की शिला (हैदराबाद)
6. ब्रह्मगिरी शिला
7. सिद्दपुर शिला
8. जटिंग रामेश्वर शिला
9. एर्रगुडि शिला
10. गोविमठ शिला
11. पालकि गुण्ड शिलाए
12. राजुल - मडगिरि शिला
13. अहरौर लघु शिला
14. नई दिल्ली शिला
15.

अशोक के स्तम्भ लेख (6)

1. टोपरा स्तम्भ (दिल्ली)
2. मेरठ स्तम्भ दिल्ली)
3. लौरिया अरराज स्तंभ (बिहार)
4. लौरिया नन्दनगढ स्तम्भ (बिहार)
5. रामपुरवा स्तम्भ (बिहार)
6. प्रयाग स्तम्भ (कौशाम्बी)

अशोक के लघु स्तम्भलेख – (6)

1. प्रयाग स्तम्भ लेख (कौशाम्बी)
2. साँची स्तम्भ लेख
3. सारनाथ स्तम्भ लेख (वाराणसी)
4. रानी स्तम्भ लेख
5. रुम्मिनदेई स्तंभ लेख (नेपाल कीतर
6. निगाली सागर स्तम्भ लेख (नेपाल कीतर

अशोक का एक लेख गुहा लेख- जो बराबर (द॰ बिहार) से प्राप्त

अन्य अभिलेख

1. शार-ए- कुना (कन्धार)
2. पुले - दारून्त (लमगान)
3.

1st Choice

Page No.
Date / /

अशोक के अभिलेखो का महत्व ->

प्राचीन भारत के इतिहास में अशोक के अभिलेखो का महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेखों से तात्कालीन समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक प्रशासनिक, धार्मिक तथा उसके व्यक्तिगत जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

(1) सामाजिक महत्व :- अशोक के अभिलेखो का सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है अशोक के अभिलेखो से हमें तात्कालिन सामाजिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। अशोक का पाचँवा शिलालेख समाज मे प्रचलित वर्ण-व्यवस्था की जानकारी देता है जिसमे चार-वर्णो का उल्लेख है - इसमे चार वर्ण ब्राह्मण वैश्य, शुद्र व क्षत्रियों का उल्लेख है। अशोक के नवे शिलालेख में दासो व भृतकों का उल्लेख है जिससे उस समय के दास प्रथा के प्रचलन की जानकारी प्राप्त होती है। अशोक के तेहरवे शिलालेख में ब्राह्मणो, व अन्य सम्प्रदायो के लोगो व गृहस्थो के लिए व्यवस्थाए प्राप्त होती है। अशोक के अभिलेखो से तात्कालिन समाज में व्याप्त रीति-रिवाजों व कर्म-काण्डो के बारे में जानकारी मिलती है। अशोक अपने नवे शिलालेख में इन कर्मकाण्डो व रीतियों का विरोध करता है। इस प्रकार अशोक के शिलालेखो से हमें सामाजिक जानकारी प्राप्त होती है।

1st Choice

Page No.
Date / /

(2) राजनैतिक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेख अशोक की साम्राज्यिक सीमाओं की जानकारी प्रदान करते है। उसके प्राप्ते स्थलों से ज्ञात होता है कि अशोक का साम्राज्य उत्तर में कालसी एवं नेपाल की तराई, दक्षिण में ब्रह्मगिरि - सिद्धपुर आदि स्थलो तथा पूर्व मे कलिंग से प० मे जूनागढ तथा उत्तर- पश्चिम मे कन्धार तक विस्तृत था। अशोक के शार-ए-कुना (कन्धार) अभिलेख से यूनानी साहित्य की पुष्टि होती है कि सेल्यूकस ने काबुल, कन्धार, हिरात, बलुचिस्तान के प्रदेश चन्द्रगुप्त मौर्य को दे दिए थे। अशोक के 2 शिलालेख व 13 वाँ शिलालेख से उसके पड़ौसी यूनानी राज्यों की व सुदूर दक्षिण के स्वतन्त्र भारतीय राज्यों की सूची मिलती है। जिससे उसके साम्राज्य की सीमा निर्धारित होती है। (अशोक के 13 वे शिलालेख अभिलेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने मात्र एक ही युद्ध किया था कलिंग का युद्ध। अतः अशोक के अभिलेखो का राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है।

(3) प्रशासनिक महत्व :- अशोक के अभिलेखो का प्रशासनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेख उसकी प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी देते है। अभिलेखो से ज्ञात होता है कि अशोक का साम्राज्य एक केन्द्रीभूत साम्राज्य था। अशोक के 4 शिलालेख में कुछ जातियो

Scanned by CamScanner

कि अशोक अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था।
ⓕ चौथे शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने अपने पूरे साम्राज्य की शक्ति को धम्म प्रचार में लगाया था इसे व भेरिघोष (युद्ध घोष) के स्थान पर धर्म घोष कहता है। 8 वे शिलालेख से ज्ञात होता है कि उसने पूर्वगामी राजाओं में प्रचलित विहार यात्रा के स्थान पर धर्मयात्राएं प्रारंभ की थी। प्रथम लघु शिलालेख व 7 स्तम्भ लेख के अनुसार उसने सामान्य मंगलोत्सवों के स्थान पर धर्म मंगलों का प्रचार किया तथा सामान्य समाजों के स्थान पर धर्म समाजों को प्रोत्साहित किया। 5 वे स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि उसने अनेक अवसरों पर पशुओं की हत्या सर्वथा निषेध कर दिया था। इस प्रकार अशोक के अभिलेखों से अशोक द्वारा अपनाई गई धार्मिक नीति की जानकारी मिलती है।

⑤ आर्थिक महत्व :- आर्थिक दृष्टि से भी अशोक के अभिलेख महत्वपूर्ण हैं। अशोक का रुम्मिनदेई शिलालेख आर्थिक जानकारी प्रदान कराने वाला एक महत्वपूर्ण शिलालेख है जिससे ज्ञात होता है कि --------

हिद भगवं जाते ति लुमिनिगामे उबलिके कटे!
अठभागिये च!

शिलालेख की यह पंक्तियाँ कर व्यवस्था की जानकारी प्रदान कराती है कि उस समय उपज का आठवां भाग कर के रूप में लिया जाता था। तथा अशोक ने अपनी यात्रा के उपलक्ष में लुम्बिनी गांव को बलिमुक्त कर दिया था। [बलि एक कर था जो प्रजा से लिया जाता था जिसे अशोक ने समाप्त कर दिया था]

⑥ व्यक्तिगत महत्व :-
अशोक के अभिलेखों से उसके परिवार और व्यक्तिगत जीवन की प्रमाणिक सूचना प्राप्त होती है। 5 वे शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक के बहुत से भाई बहिन थे। जिनमें अपने अन्तपुर: थे। उसके काम से द

⑦ लिपियात्मक व भाषात्मक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का लिपियात्मक व भाषात्मक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है अशोक के अभिलेख बहुसंख्यक व भारत के प्राचीनतम अभिलेख होने के कारण तात्कालिन भारत की लिपियात्मक व भाषात्मक स्थिति पर भी रोचक प्रकाश डालते हैं। अशोक ने अपने

1st Choice

पश्चिमोत्तर प्रदेशो के अभिलेखो में यूनानी एरेमाईक व ~~खरोष्ठी~~ ब्राह्मी लिपियो का प्रयोग किया है अशोक के शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा अभिलेख खरोष्ठी लिपि के प्राचीनतम लेख है तथा शेष समस्त भारत मे उसने अपने अभिलेखो मे ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया है। (वैसे लेखन कला अथवा लिपि के विकास का प्रथम उदा• सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त लिपि अंकित मुहर से मिलता है लेकिन उस लिपि को अभी तक पढा नही गया है?) इस कारण अशोक के अभिलेखो मे प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि को ही भारत की प्राचीनतम लिपि मानी गई जिसकी पुष्टि अशोक के अभिलेख करते है

(8) साहित्यिक महत्व:— अशोक के अभिलेखो का साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक अपने वैराठ (भाब्रु) शिलालेख मे सात बौद्ध ग्रंथो की बात करता है। तथा अशोक के काल मे बौद्ध त्रिपिटक का विकास भी प्रारंभ हो गया था। अशोक के अभिलेखो की भाषा मे पालि, त्रिपिटक की भाषा व वाक्य-विन्यास का गहरा प्रभाव मिलता है। अशोक के अभिलेख बौद्धेतर सा• के लिए भी महत्वपूर्ण है जैसे उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द परिस्त्रवे, अपरिस्त्रवे (10वा शिलालेख) तथा ओसिनवे (2 स्तम्भ लेख) आदि शब्द बौद्ध सा• के न होकर जैन साहित्य से लिए गए है, अतः इस प्रकार अशोक के अभिलेख तत्कालिन भारत के भावात्मक मानचित्र को समझने में महत्वपूर्ण है।

1st Choice

अभिलेखो का सामान्य महत्व

Scanned by CamScanner